الَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ الَآءِ رَبِّكُمَا

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में औरतें हैं आ़दत की नेक सूरत की अच्छी तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ الَآءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे हूरें हैं ख़ैमों में पर्दा नशीन[47] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ الَآءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे उन से पहले उन्हें हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ

झुटलाओगे[48] तक्या लगाए हुए सब्ज़ बिछोनों और मुनक्क़श ख़ूब सूरत चांदनियों पर तो अपने

الَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾ ع ٣ ١٣

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अ़ज़मत वाला बुज़ुर्गी वाला

اٰياتها ٩٦ — ٥٦ سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ ٤٦ — رکوعاتها ٣

सूरए वाक़िअ़ह मक्किय्या है, इस में छियानवे आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ وقف لازم

जब हो लेगी वोह होने वाली[2] उस वक़्त उस के होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी किसी को पस्त करने वाली[3] किसी को बुलन्दी देने वाली[4]

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً

जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर[5] और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा हो कर तो हो जाएंगे जैसे रोज़न (सूराख़) की धूप में ग़ुबार के

47 : कि उन ख़ैमों से बाहर नहीं निकलतीं, येह उन की शराफ़त व करामत है। ह़दीस शरीफ़ में है अगर जन्नती औ़रतों में से ज़मीन की त़रफ़ किसी की एक झलक पड़ जाए तो आस्मान व ज़मीन के दरमियान की तमाम फ़ज़ा रोशन हो जाए और ख़ुश्बू से भर जाए और उन के ख़ैमे मोती और ज़बर जद के होंगे। **48 :** और उन के शोहर जन्नत में ऐश करेंगे **1 :** सूरए वाक़िअ़ह मक्किय्या है सिवाए आयत "اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ" और आयत "ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ" के, इस सूरत में तीन 3 रुकूअ़ और छियानवे या सत्तानवे या निनानवे आयतें और तीन सो अठत्तर 378 कलिमे और एक हज़ार सात सो तीन 1703 ह़र्फ़ हैं। इमाम बग़वी ने एक ह़दीस रिवायत की है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरए वाक़िअ़ह को हर शब पढ़े वोह फ़ाक़े से हमेशा मह़फ़ूज़ रहेगा। (خازن) **2 :** या'नी जब क़ियामत क़ाइम हो जो ज़रूर होने वाली है। **3 :** जहन्नम में गिरा कर **4 :** दुखूले जन्नत के साथ। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जो लोग दुन्या में ऊंचे थे क़ियामत उन्हें पस्त करेगी और जो दुन्या में पस्ती में थे उन के मर्तबे बुलन्द करेगी और येह भी कहा गया है कि अहले मा'सियत को पस्त करेगी और अहले त़ाअ़त को बुलन्द। **5 :** ह़त्ता कि इस की तमाम इमारतें गिर जाएंगी।

www.dawateislami.net

مُّنۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ

बारीक ज़र्रे फैले हुए और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे तो दहनी त़रफ़ वाले[6] कैसे दहनी

الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَاَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿٩﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ

त़रफ़ वाले[7] और बाईं त़रफ़ वाले[8] कैसे बाईं त़रफ़ वाले[9] और जो सब्क़त ले गए[10]

السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ

वोह तो सब्क़त ही ले गए[11] वोही मुक़र्रबे बारगाह हैं चैन के बाग़ों में अगलों में से

الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ﴿١٥﴾

एक गुरौह और पिछलों में से थोड़े[12] जड़ाउ तख़्तों पर होंगे[13]

مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ﴿١٧﴾

उन पर तक्या लगाए हुए आमने सामने[14] उन के गिर्द लिये फिरेंगे[15] हमेशा रहने वाले लड़के[16]

بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا

कूज़े और आफ़्ताबे और जाम आंखों के सामने बहती शराब के उस से न उन्हें दर्दे सर हो

يُنْزِفُوْنَ ۙ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا

न होश में फ़र्क़ आए[17] और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त

6 : या'नी जिन के नामए आ'माल उन के दहने हाथों में दिये जाएंगे। **7 :** येह उन की ता'ज़ीमे शान के लिये फ़रमाया, वोह बड़ी शान रखते हैं, सईद हैं, जन्नत में दाख़िल होंगे। **8 :** जिन के नामहाए आ'माल बाएं हाथों में दिये जाएंगे। **9 :** येह उन की तह़क़ीरे शान के लिये फ़रमाया कि वोह शक़ी हैं जहन्नम में दाख़िल होंगे। **10 :** नेकियों में **11 :** दुख़ूले जन्नत में। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि वोह हिजरत में सब्क़त करने वाले हैं कि आख़िरत में जन्नत की त़रफ़ सब्क़त करेंगे। **एक** क़ौल येह है कि वोह इस्लाम की त़रफ़ सब्क़त करने वाले हैं और **एक** क़ौल येह है कि वोह मुहाजिरीन व अन्सार हैं जिन्हों ने दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ें पढ़ीं **12 :** या'नी साबिक़ीन अगलों में से बहुत हैं और पिछलों में से थोड़े और अगलों में से मुराद या तो पहली उम्मतें हैं ज़मानए ह़ज़रते आदम से हमारे सरकार सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक तक की, जैसा कि अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है, लेकिन येह क़ौल निहायत ज़ईफ़ है अगर्चे मुफ़स्सिरीन ने इस के वुजूहे ज़ो'फ़ के जवाब में बहुत सी तौजीहात भी की हैं, क़ौले सह़ीह़ तफ़्सीर में येह है कि अगलों से उम्मते मुह़म्मदिय्यह ही के पहले लोग मुहाजिरीन व अन्सार में से जो साबिक़ीने अव्वलीन हैं वोह मुराद हैं और पिछलों से उन के बा'द वाले, अह़ादीस से भी इस की ताईद होती है। ह़दीसे मरफ़ूअ़ में है कि अव्वलीनो आख़िरीन यहां इसी उम्मत के पहले और पिछले हैं और येह भी मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दोनों गुरौह मेरी ही उम्मत के हैं। (تفسیر کبیر و بحر العلوم وغیرہ) **13 :** जिन में ला'ल, याक़ूत, मोती वग़ैरा जवाहिरात जड़े होंगे **14 :** हुस्ने इ़शरत के साथ बा शानो शकोह एक दूसरे को देख कर मसरूर दिलशाद होंगे **15 :** आदाबे ख़िदमत के साथ **16 :** जो न मरें न बूढ़े हों न उन में तग़य्युर आए, येह **अल्लाह** तआ़ला ने अहले जन्नत की ख़िदमत के लिये जन्नत में पैदा फ़रमाए। **17 :** ब ख़िलाफ़ शराबे दुन्या के कि इस के पीने से ह़वास मुख़्तल हो जाते हैं (बिगड़ जाते हैं)।

www.dawateislami.net

يَشْتَهُوْنَ ؕ﴿۲۱﴾ وَ حُوْرٌ عِيْنٌ ۙ﴿۲۲﴾ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ﴿۲۳﴾ جَزَآءًۢ

जो चाहें[18] और बड़ी आंख वालियां हूरें[19] जैसे छुपे रखे हुए मोती[20] सिला

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّ لَا تَاْثِيْمًا ۙ﴿۲۵﴾ اِلَّا

उन के आ'माल का[21] उस में न सुनेंगे कोई बेकार बात न गुनहगारी[22] हां

قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿۲۶﴾ وَ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۬ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ؕ﴿۲۷﴾ فِيْ

येह कहना होगा सलाम सलाम[23] और दहनी त़रफ़ वाले कैसे दहनी त़रफ़ वाले[24] बे कांटे

سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ﴿۲۸﴾ وَّ طَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ﴿۲۹﴾ وَّ ظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ﴿۳۰﴾ وَّ مَآءٍ

की बेरियों में और केले के गुच्छों में[25] और हमेशा के साए में और हमेशा

مَّسْكُوْبٍ ۙ﴿۳۱﴾ وَّ فَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۙ﴿۳۲﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّ لَا مَمْنُوْعَةٍ ۙ﴿۳۳﴾ وَّ

जारी पानी में और बहुत से मेवों में जो न ख़त्म हों[26] और न रोके जाएं[27] और

فُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ؕ﴿۳۴﴾ اِنَّاۤ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۙ﴿۳۵﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۙ﴿۳۶﴾

बुलन्द बिछोनों में[28] बेशक हम ने उन औ़रतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कुंवारियां अपने शोहर पर प्यारियां

عُرُبًا اَتْرَابًا ۙ﴿۳۷﴾ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ﴿۳۸﴾ ع ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿۳۹﴾ وَ ثُلَّةٌ ع

उन्हें प्यार दिलातियां एक उ़म्र वालियां[29] दहनी त़रफ़ वालों के लिये अगलों में से एक गुरौह और पिछलों

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ﴿۴۰﴾ وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۬ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ؕ﴿۴۱﴾ فِيْ

में से एक गुरौह[30] और बाईं त़रफ़ वाले[31] कैसे बाईं त़रफ़ वाले[32] जलती

18 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अगर जन्नती को परिन्दों के गोश्त की ख़्वाहिश होगी तो उस के ह़स्बे मरज़ी परिन्द उड़ता हुवा सामने आएगा और रिकाबी में आ कर सामने पेश होगा उस में से जितना चाहेगा जन्नती खाएगा फिर वोह उड़ जाएगा। (خازن)
19 : उन के लिये होंगी **20 :** या'नी जैसा मोती सदफ़ में छुपा होता है कि न तो उसे किसी के हाथ ने छुवा न धूप और हवा लगी उस की सफ़ाई अपनी निहायत पर है, इसी त़रह़ वोह हूरें अछूती होंगी, येह भी मरवी है कि हूरों के तबस्सुम से जन्नत में नूर चमकेगा और जब वोह चलेंगी तो उन के हाथों और पाउं के ज़ेवरों से तक़्दीस व तम्जीद की आवाज़ें आएंगी और याक़ूती हार उन की गरदनों के ह़ुस्नो ख़ूबी से हंसेंगे। **21 :** कि दुन्या में उन्हों ने फ़रमां बरदारी की। **22 :** या'नी जन्नत में कोई ना गवार और बात़िल बात सुनने में न आएगी। **23 :** जन्नती आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे, मलाएका अहले जन्नत को सलाम करेंगे **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की त़रफ़ से उन की त़रफ़ सलाम आएगा, येह ह़ाल तो साबिक़ीने मुक़र्रबीन का था, इस के बा'द जन्नतियों के दूसरे गुरौह अस्ह़ाबे यमीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है : **24 :** उन की अ़जीब शान है कि **अल्लाह** के ह़ुज़ूर में मुअ़ज़्ज़ज़ो मुकर्रम हैं। **25 :** जिन के दरख़्त जड़ से चोटी तक फलों से भरे होंगे। **26 :** जब कोई फल तोड़ा जाए फ़ौरन उस की जगह वैसे ही दो मौजूद। **27 :** अहले जन्नत फलों के लेने से। **28 :** जो मुरस्सअ़ ऊंचे ऊंचे तख़्तों पर होंगे और येह भी कहा गया है कि बिछोनों से मुराद औ़रतें हैं इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि औ़रतें फ़ज़्लो जमाल में बुलन्द दरजा रखती होंगी। **29 :** जवान और उन के शोहर भी जवान और येह जवानी हमेशा क़ाइम रहने वाली। **30 :** येह अस्ह़ाबे यमीन के दो गुरौहों का बयान है कि वोह इस उम्मत

www.dawateislami.net

سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾

हवा और खौलते पानी में और जलते धूएं की छाउं में[33] जो न ठन्डी न इ़ज़्ज़त की

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ

बेशक वोह इस से पहले[34] ने'मतों में थे और उस बड़े गुनाह की[35] हट (ज़िद)

الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا

रखते थे और कहते थे क्या जब हम मर जाएं और हड्डियां और मिट्टी हो जाएं तो क्या ज़रूर हम

لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَ

उठाए जाएंगे और क्या हमारे अगले बाप दादा भी तुम फ़रमाओ कि बेशक सब अगले और

الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ

पिछले ज़रूर इकट्ठे किये जाएंगे एक जाने हुए दिन की मीआ़द पर[36] फिर बेशक तुम

اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾

ऐ गुमराहो[37] झुटलाने वालो ज़रूर थूहड़ के पेड़ में से खाओगे

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ

फिर उस से पेट भरोगे फिर उस पर खौलता पानी पियोगे फिर ऐसा पियोगे

شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْ

जैसे सख़्त प्यासे ऊंट पियें[38] येह उन की मेहमानी है इन्साफ़ के दिन हम ने तुम्हें पैदा किया[39] तो तुम क्यूं

لَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ

नहीं सच मानते[40] तो भला देखो तो वोह मनी जो गिराते हो[41] क्या तुम उस का आदमी बनाते हो या हम

के पहलों पिछलों दोनों गुरौहों में से होंगे, पहले गुरौह तो अस्हाबे रसूलुल्लाह हैं (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और पिछले उन के बा'द वाले, इस से पहले रुकूअ़ में साबिक़ीने मुक़र्रबीन की दो जमाअ़तों का ज़िक्र था और इस आयत में अस्हाबे यमीन के दो गुरौहों का बयान है। **31 :** जिन के नामए आ'माल बाएं हाथों में दिये जाएंगे। **32 :** उन का ह़ाल शक़ावत में अ़जीब है, उन के अ़ज़ाब का बयान फ़रमाया जाता है कि वोह इस ह़ाल में होंगे : **33 :** जो निहायत तारीक व सियाह होगा **34 :** दुन्या के अन्दर **35 :** या'नी शिर्क की **36 :** वोह रोज़े क़ियामत है। **37 :** राहे ह़क़ से बहक्ने वालो और ह़क़ को **38 :** उन पर ऐसी भूक मुसल्लत़ की जाएगी कि वोह मुज़्तर हो कर जहन्नम का जलता थूहड़ खाएंगे, फिर जब उस से पेट भर लेंगे तो उन पर प्यास मुसल्लत़ की जाएगी जिस से मुज़्तर हो कर ऐसा खौलता पानी पियेंगे जो आंतें काट डालेगा। **39 :** नेस्त से हस्त किया **40 :** मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को। **41 :** औ़रतों के रेह़्म में।

www.dawateislami.net

الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾

बनाने वाले हैं[42] हम ने तुम में मरना ठहराया[43] और हम इस से हारे नहीं

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस की तुम्हें ख़बर नहीं[44] और बेशक तुम जान चुके हो

النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾

पहली उठान[45] फिर क्यूं नहीं सोचते[46] तो भला बताओ तो जो बोते हो

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

क्या तुम उस की खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं[47] हम चाहें तो[48] उसे रौंदन (पामाल) कर दें[49]

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

फिर तुम बातें बनाते रह जाओ[50] कि हम पर चट्टी (तावान) पड़ी[51] बल्कि हम बे नसीब रहे

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ

तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या

نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

हम हैं उतारने वाले[52] हम चाहें तो उसे खारी कर दें[53] फिर क्यूं नहीं शुक्र करते[54]

اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ

तो भला बताओ तो वोह आग जो तुम रोशन करते हो[55] क्या तुम ने उस का पेड़ पैदा किया[56] या हम हैं

الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ

पैदा करने वाले हम ने उसे[57] जहन्नम की यादगार बनाया[58] और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ाएदा[59] तो ऐ महबूब तुम पाकी बोलो

42 : कि नुत्फ़े को सूरते इन्सानी देते हैं, ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाते हैं, तो मुर्दों को ज़िन्दा करना हमारी क़ुदरत से क्या बईद। **43 :** हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत व मशिय्यत और उ़म्रें मुख़्तलिफ़ रखीं, कोई बचपन ही में मर जाता है कोई जवान हो कर, कोई अधेड़ उ़म्र में, कोई बुढ़ापे तक पहुंचता है, जो हम मुक़द्दर करते हैं वोही होता है। **44 :** या'नी मस्ख़ कर के बन्दर सुअर वग़ैरा की सूरत बना दें, येह सब हमारी क़ुदरत में है। **45 :** कि हम ने तुम्हें नेस्त से हस्त किया। **46 :** कि जो नेस्त को हस्त कर सकता है वोह बिल यक़ीन मुर्दे को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **47 :** इस में शक नहीं कि बालें बनाना और उस में दाने पैदा करना **अल्लाह** तआ़ला ही का काम है और किसी का नहीं। **48 :** जो तुम बोते हो **49 :** ख़ुश्क घास चूरा चूरा जो किसी काम की न रहे **50 :** मुतहय्यिर और नादिम व ग़मगीन **51 :** हमारा माल बेकार ज़ाएअ़ हो गया **52 :** अपनी क़ुदरते कामिला से **53 :** कि कोई पी न सके। **54 : अल्लाह** तआ़ला की ने'मत और उस के एह़सान व करम का। **55 :** दो तर लकड़ियों से जिन को ज़न्द व ज़न्दा कहते हैं उन के रगड़ने से आग निकलती है। **56 :** मर्ख़ व अ़फ़ार (दो दरख़्त) जिन से ज़न्द व ज़न्दा (तर लकड़ियां) ली जाती है। **57 :** या'नी आग को **58 :** कि देखने वाला उस को देख कर जहन्नम की बड़ी आग को याद करे और **अल्लाह** तआ़ला से और उस

www.dawateislami.net

بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ٧٤ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ٧٥ وَ اِنَّهٗ لَقَسَمٌ

अपने अ़ज़्मत वाले रब के नाम की तो मुझे क़सम है उन जगहों की जहां तारे डूबते हैं[60] और तुम समझो

لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ٧٦ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ٧٧ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ٧٨ لَّا

तो येह बड़ी क़सम है बेशक येह इ़ज़्ज़त वाला क़ुरआन है[61] मह़फ़ूज़ नविश्ते में[62] इसे न

يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ٧٩ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٨٠ اَفَبِهٰذَا

छूएं मगर बा वुज़ू[63] उतारा हुवा है सारे जहान के रब का तो क्या

الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ٨١ وَ تَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ٨٢

इस बात में तुम सुस्ती करते हो[64] और अपना हिस्सा येह रखते हो कि झुटलाते हो[65]

فَلَوْ لَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ٨٣ وَ اَنْتُمْ حِيْنَىِٕذٍ تَنْظُرُوْنَ ٨٤ وَ نَحْنُ

फिर क्यूं न हो कि जब जान गले तक पहुंचे और तुम[66] उस वक़्त देख रहे हो और हम[67]

اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَ لٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ٨٥ فَلَوْ لَاۤ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ

उस के ज़ियादा पास हैं तुम से मगर तुम्हें निगाह नहीं[68] तो क्यूं न हुवा अगर तुम्हें

مَدِيْنِيْنَ ٨٦ تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٨٧ فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ

बदला मिलना नहीं[69] कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो[70] फिर वोह मरने वाला अगर

الْمُقَرَّبِيْنَ ٨٨ فَرَوْحٌ وَّ رَيْحَانٌ ۙ۬ وَّ جَنَّتُ نَعِيْمٍ ٨٩ وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ

मुक़र्रबों से है[71] तो राह़त है और फूल[72] और चैन के बाग़[73] और अगर[74]

के अ़ज़ाब से डरे। **59 :** कि अपने सफ़रों में उस से नफ़्अ़ उठाते हैं। **60 :** कि वोह मक़ाम हैं ज़ुहूरे क़ुदरत व जलाले इलाही के। **61 :** जो सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया गया, क्यूं कि येह कलामे इलाही और वह़्ये रब्बानी है। **62 :** जिस में तब्दील व तह़रीफ़ मुम्किन नहीं। **63 मसाइल :** जिस को ग़ुस्ल की ह़ाजत हो या जिस का वुज़ू न हो या ह़ाइज़ा औ़रत या निफ़ास वाली इन में से किसी को क़ुरआने मजीद का बिग़ैर ग़िलाफ़ वग़ैरा किसी कपड़े के छूना जाइज़ नहीं, बे वुज़ू को याद पर (ज़बानी) क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है लेकिन बे ग़ुस्ल और ह़ैज़ वाली को येह भी जाइज़ नहीं। **64 :** और नहीं मानते **65 :** ह़ज़रते ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया वोह बन्दा बड़े टोटे (ख़सारे) में है जिस का ह़िस्सा किताबुल्लाह की तक्ज़ीब हो। **66 :** ऐ अहले मय्यित ! **67 :** अपने इ़ल्मो क़ुदरत के साथ **68 :** तुम बसीरत नहीं रखते तुम नहीं जानते। **69 :** मरने के बा'द उठ कर **70 :** कुफ़्फ़ार से फ़रमाया गया कि अगर ब ख़याल तुम्हारे मरने के बा'द उठना और आ'माल का ह़िसाब किया जाना और जज़ा देने वाला मा'बूद येह कुछ भी न हो तो फिर क्या सबब है कि जब तुम्हारे प्यारों की रूह़ ह़ल्क़ में पहुंचती है तो तुम उसे लौटा क्यूं नहीं लाते और जब येह तुम्हारे इख़्तियार में नहीं तो समझो कि काम **अल्लाह** तआ़ला के इख़्तियार में है उस पर ईमान लाओ, इस के बा'द मख़्लूक़ के त़बक़ात के अह़वाल वक़्ते मौत और उन के दरजात का बयान फ़रमाया। **71 :** साबिक़ीन में से जिन का ज़िक्र ऊपर हो चुका तो उस के लिये **72 :** अबुल आ़लिया ने कहा कि मुक़र्रबीन से जो कोई दुन्या से मुफ़ारक़त करता है उस के पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है, उस की ख़ुश्बू लेता है तब रूह़ क़ब्ज़ होती है। **73 :** आख़िरत में **74 :** मरने वाला।

مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَاَمَّاۤ اِنْ

दह्नी त़रफ़ वालों से हो तो ऐ महबूब तुम पर सलाम है दह्नी त़रफ़ वालों से[75] और अगर[76]

كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّ تَصْلِيَةُ

झुटलाने वालों गुमराहों में से हो[77] तो उस की मेहमानी खौलता पानी और भड़क्ती आग

جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾ ع ٣ ٢٢/١٦

में धंसाना[78] येह बेशक आ'ला दरजे की यक़ीनी बात है तो ऐ महबूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो[79]

اٰیاتها ٢٩ | ٥٧ سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ ٩٤ | رکوعاتها ٤

सूरए ह़दीद मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[2] और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है उसी के लिये है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत जिलाता है[3] और मारता[4] और वोह सब कुछ

قَدِيْرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

कर सकता है वोही अव्वल[5] वोही आख़िर[6] वोही ज़ाहिर[7] वोही बात़िन[8] और वोही सब कुछ

75 : मा'ना येह हैं कि ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप उन का सलाम क़बूल फ़रमाएं और उन के लिये ग़मगीन न हों, वोह अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से सलामत व महफ़ूज़ रहेंगे और आप उन को उसी ह़ाल में देखेंगे जो आप को पसन्द हो। 76 : मरने वाला 77 : या'नी अस्ह़ाबे शिमाल में से 78 : जहन्नम की और मरने वालों के अह़वाल और जो मज़ामीन इस सूरत में बयान किये गए 79 **ह़दीस :** जब येह आयत नाज़िल हुई : "فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ" तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया इस को अपने रुकूअ़ में दाख़िल करो और जब "سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى" नाज़िल हुई तो फ़रमाया इसे अपने सज्दों में दाख़िल करो। (ابوداؤد) **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीह़ात क़ुरआने करीम से माख़ूज़ हैं। 1 : सूरए ह़दीद मक्किय्या है या मदनिय्या, इस में चार 4 रुकूअ़, उन्तीस 29 आयतें, पांच सो चवालीस 544 कलिमे, दो हज़ार चार सो छिहत्तर 2476 ह़र्फ़ हैं। 2 : जानदार हो या बेजान। 3 : मख़्लूक़ को पैदा कर के या येह मा'ना हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है 4 : या'नी मौत देता है ज़िन्दों को 5 : क़दीम, हर शै से क़ब्ल, अव्वले बे इब्तिदा कि वोह था और कुछ न था। 6 : हर शै के हलाक व फ़ना होने के बा'द रहने वाला, सब फ़ना हो जाएंगे और वोह हमेशा रहेगा उस के लिये इन्तिहा नहीं। 7 : दलाइल व बराहीन से या येह मा'ना कि ग़ालिब हर शै पर। 8 : ह़वास उस के इदराक से आ़जिज़ या येह मा'ना कि हर शै का जानने वाला।

www.dawateislami.net